अध्याय-8

अक्षरब्रह्मयोग-नामक 8वाँ अ0।।

[1-7 ब्रह्म, अध्यात्म और कर्मादि के विषय में अर्जुन के 7 प्रश्न और उनका उत्तर।]

अर्जुन उवाच:-किं तत् ब्रह्म किं अध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम। अधिभूतं च किं प्रोक्तं अधिदैवं किं उच्यते।। 8/1

पुरुषोत्तम तत् ब्रह्म किं	हे आत्माओं में सर्वोत्तम सदाशिवज्योति! वह {सर्व का माननीय परम} ब्रह्म क्या है?
अध्यात्मं किं कर्म किं अधिभूतं	आत्मा के अंदर क्या है? कर्म क्या है? {प्राणवायु धारणकर्ता} प्राणियों का अधिपति
किं प्रोक्तं च अधिदैवं किं उच्यते	किसको कहते हैं? और {दिवलोक में रहने वाले} देवों का अधिपति किसे कहा जाता है?

अधियज्ञ: कथं क: अत्र देहे अस्मिन् मधुसूदन। प्रयाणकाले च कथं ज्ञेय: असि नियतात्मभि:।। 8/2

मधुसूदन अत्र देहे अधियज्ञ: कथं	हे मधु जैसे मीठे काम के हंता {शिवबाबा}! इस देह में यज्ञ का अधिपति कैसे {और}
क: चास्मिन् प्रयाणकाले	कौन है? और इस {देह} में महामृत्यु के समय {सच्चीगीता फैमिली-प्लानिंग में}
नियतात्मभि: कथं ज्ञेयोऽसि	वशीभूत मन-बुद्धि वालों द्वारा कैसे जानने योग्य है?

श्रीभगवानुवाच:-अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभाव: अध्यात्मं उच्यते। भूतभावोद्भवकर: विसर्ग: कर्मसञ्ज्ञित:।। 8/3

अक्षरं परमं ब्रह्म स्वभाव:	क्षरितहीन/अमोघवीर्य {शिवबाबा} परब्रह्म है। {आत्म-रिकॉर्ड में} अपना भाव
अध्यात्ममुच्यते भूतभावोद्भवकर:	अध्यात्म {अधि+आत्म} कहा जाता है। प्राणी-भाव की {मानसी} उत्पत्ति करने वाला
विसर्ग: कर्मसंज्ञित:	{विश्व-सेवार्थ तन-धन आदि का} त्याग {यज्ञ-सेवा का सर्वोत्तम} कर्म कहा जाता है।

अधिभूतं क्षरो भाव: पुरुषश्च अधिदैवतं। अधियज्ञ: अहं एव अत्र देहे देहभृतां वर।। 8/4

देहभृतां वर क्षरो	हे देहधारियों में श्रेष्ठ {=हीरोपार्टधारी! 16 कला सतयुगादि से ही अधोमुखी अर्थात्} क्षरित
भाव: अधिभूतं च	भाव वाला प्राणियों का अधिपति {जो सतयुग में भी भोगी & कलाबद्ध कृष्णचन्द्र} है तथा
पुरुष: अधिदैवतं	देहरूपा पुरी में आराम से शयनकर्ता {कलातीत विष्णु या} देवों का अधिपति महादेव {ही} है।
अत्र देहे अधियज्ञ: अहमेव	यहाँ {अर्जुन के रथरूप} देह में रुद्र-यज्ञ का अधिपति {महारुद्र शिव+बाबा} मैं ही {हूँ}।

अन्तकाले च मां एव स्मरन् मुक्त्वा कलेवरं। य: प्रयाति स मद्भावं याति न अस्ति अत्र संशय:।। 8/5

य: अन्तकाले मां एव स्मरन्	जो अन्तकाल में भी मुझ {एकमात्र शिवबाबा} को ही {अव्यभिचारी होकर} याद करते हुए
कलेवरं मुक्त्वा प्रयाति स मद्भावं	शरीर {या देहभान} को छोड़कर महाप्रयाण करता है, वह {योगी} मेरे {राजाई} भाव को
याति च अत्र संशय: नास्ति	पाता है और इसमें संशय नहीं है। {वह मेरे जैसा ही युगानुरूप सुखदायी शासक होगा।}

यं यं वा अपि स्मरन् भावं त्यजति अन्ते कलेवरं। तं तं एव एति कौन्तेय सदा तद्भावभावित:।। 8/6

कौन्तेय वा यं-2 भावं अपि	हे {देहभान हरिणी} कुन्ती के पुत्र! अथवा जो-2 {संबन्ध के} भाव को भी {अर्जुन-रथ में}
स्मरन् अन्ते कलेवरं त्यजति सदा	याद करता हुआ अंत में शरीर {या देहभान} को त्यागता है, {तो} सदा {उस जन्म में}
तद्भावभावित: तं-2 एव एति	उसी भावना से प्रभावित हुआ उस-2 {संबंध• के भाव} को ही पाता है।

•{जैसे स्त्री की याद में शरीर छोड़ेगा तो स्त्री चोला ही मिलेगा। इसीलिए 'अंत मते सो गते' की कहावत प्रसिद्ध है।}

तस्मात् सर्वेषु कालेषु मां अनुस्मर युध्य च। मयि अर्पितमनोबुद्धि: मां एव एष्यसि असंशयं।। 8/7

तस्मात् सर्वेषु कालेषु मां अनुस्मर	इसलिए हर समय {ऊँच-ते-ऊँच हीरो में} मुझ {शिवज्योति} को स्मरण कर
च युध्य असंशयं मयि	और {विकारों की माया से अहिंसक} युद्ध कर। निस्सन्देह मेरे में
अर्पितमनोबुद्धि: मां एवैष्यसि	अर्पित हुई मन-बुद्धि वाला {तू इस राजयोग से} मेरे {राजाई• भाव} को ही पा लेगा।

लक्ष्यः- •{साक्षात् ईश्वर द्वारा सिखाए राजयोग/बुद्धियोग से ही कलियुग के अंत तक स्वाधीन राजाओं की राजाई चली है। अन्यथा कोई भी विधर्मी धर्मपिताओं ने राजाई का ज्ञान नहीं दिया, सबने आधीन ही बनाया है।}

[8-22 भक्तियोग का विषय।]

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना। परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थ अनुचिन्तयन्।। 8/8

पार्थ अनुचिन्तयन् अभ्यास-	हे पृथ्वी के राजा! विचार-मंथन करते हुए, {इस राजयोग के} अभ्यास द्वारा
योगयुक्तेन नान्यगामिना चेतसा	योगयुक्त हुई अव्यभिचारी मन-बुद्धि से, {अर्जुन-रथ में प्रविष्ट 'मामेकं' की सतत् याद से}
दिव्यं परमं पुरुषं याति	{ज्ञानसूर्य स्वरूप} दिव्य प्रकाशयुक्त परमपुरुष {परमपिता शिव+बाबा} को पाता है।

कविं पुराणं अनुशासितारं अणोरणीयांसं अनुस्मरेत् यः। सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपं आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।। 8/9

प्रयाणकाले मनसा अचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव। भ्रुवोः मध्ये प्राणं आवेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषं उपैति दिव्यं।। 8/10

यः पुराणं कविं अनुशासितारं	जो {योगी} प्राचीनतम {गीतकार} कवि को, {सब प्राणियों के} शासक,
अणोरणीयांसं सर्वस्य धातारं	सूक्ष्माणु से {भी} अतिसूक्ष्म, सब {जड़-चेतन} के धारणकर्ता, {वटवृक्षरूपसृष्टि के बीज}
अचिन्त्यरूपं आदित्यवर्णं	{बने अति सूक्ष्म} अचिन्त्य रूप वाले, सूर्य की तरह {अखूट ज्ञानप्रकाश के तीक्ष्ण} वर्ण वाले,
तमसः परस्तात् प्रयाणकाले	अज्ञानान्धकार से परे {ज्ञानसूर्य शिवबाबा को पु.संगमयुगी} प्रलयकाल में
भक्त्याचलेन च मनसा योगबलेन	अचल-अडोल भक्ति-भाव से और {अव्यभिचारी} मन-बुद्धि द्वारा योगबलपूर्वक
युक्तः भ्रुवोः मध्ये एव प्राणं	लगा हुआ, भ्रूमध्य में ही प्राण {रूप आत्म-ज्योतियुक्त सूक्ष्मबिंदु स्वरूप} को
सम्यक् आवेश्य अनुस्मरेत् स तं	अच्छे-से स्थिर कर याद करता है, वह उस {श्रेष्ठतम हीरो पार्टधारी},

दिव्यं परं पुरुषं उपैति	{शिवसमान} दिव्यज्योति परमात्मा को पाता है। {जैसे शिवबाप स्वयं जन्म-2 का ही साथी हो गया हो।}

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यत् यतयो वीतरागाः। यत् इच्छन्तः ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये।। 8/11

वेदविदः यत् अक्षरं वदन्ति वीतरागाः	{चौमुखी} ब्रह्मा-वाणी के ज्ञाता जिसे अमोघवीर्य बताते हैं, रागरहित {सहजराज}
यतयः यद्विशन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं	योगीजन जिस {ऊर्ध्वमुखी परंब्रह्मा} में प्रवेश पाते हैं, जिसके इच्छुक ब्रह्मचर्य का
चरन्ति ते तत्पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये	{ज्ञानयुक्त} आचरण करते हैं, तुझे उस {विष्णुलोकीय} पद को संक्षेप में बताऊँगा।

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च। मूर्ध्नि आधाय आत्मनः प्राणं आस्थितो योगधारणां।। 8/12

सर्वद्वाराणि संयम्य च मनः हृदि	सारे {ही नव} इन्द्रिय-द्वार {अविचल रूप से} संपूर्णतः वश करके और मन को अन्तःकरण में
निरुध्य आत्मनः प्राणं योग	रोककर, {ज्योतिबिंदुरूप} आत्मा की प्राण-शक्ति को {शिवबाबा से} योग की
धारणां आधाय मूर्ध्नि आस्थितः	धारणा में आधारित, {निरंतर परमात्मा की} भृकुटि {रूप अकालतख़्त के मध्य} में स्थिर होकर।

ओम इति एकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मां अनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिं।। 8/13

ॐ इति एकाक्षरं व्याहरन् मां ब्रह्म	'ॐ'- ऐसा एकाक्षर {मन से} व्यवहार में लाते हुए, मुझ परंब्रह्म को {प्रीतिपूर्वक}
अनुस्मरन् देहं त्यजन् यः प्रयाति	याद करता हुआ {और} शरीर को त्यागता हुआ जो {कल्पान्त में} महामृत्यु पाता है,
स परमां गतिं याति	वह {संगठित चतुर्भुजी विष्णु के कलातीत अतीन्द्रिय सुखरूप वैकुण्ठ की} परमगति को पाता है।

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः। तस्य अहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।। 8/14

अनन्यचेताः यः मां नित्यशः सततं	अव्यभिचारी {मनबुद्धि रूपी} चित्त से जो {योगी} मुझको नित्य-निरन्तर {लगावपूर्वक}
स्मरति पार्थ तस्य नित्ययुक्तस्य	{प्रेम से} याद करता है, हे कुन्तीपुत्र! उस नित्य-नियमपूर्वक लगनशील {रहने वाले}

योगिनः अहं सुलभः	योगी को मैं सुखपूर्वक मिलता हूँ। {इसीलिए संसार में भारतीय प्राचीन सहजराजयोग प्रसिद्ध है।}

मां उपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयं अशाश्वतं। न आप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः।। 8/15

मां उपेत्य परमां	मेरे {पंचमुखी परमब्रह्म महादेव} पास पहुँचकर {विष्णु चतुर्भुज रूप} परमोत्कृष्ट {वैकुण्ठवासी की}
संसिद्धिं गताः महात्मानः अशाश्वतं	संपूर्ण सिद्धि को पहुँचे हुए महात्माएँ {इस} विनाशी {नारकीय/द्वापुर-कलियुगी}
दुःखालयं पुनर्जन्म न आप्नुवन्ति	दुखधाम में {सीधे} पुनर्जन्म नहीं पाते, {वे सत-त्रेता के 2500 वर्ष सुखधाम ही जाते हैं।}

आब्रह्मभुवनात् लोकाः पुनरावर्तिनः अर्जुन। मां उपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।। 8/16

अर्जुन आब्रह्मभुवनाल्लोकाः	हे अर्जुन! {यद्यपि} ब्रह्मलोक से लेकर सभी {स्वर्ग & नरकों के 7 विधर्मी धर्मखण्ड}
पुनरावर्तिनः तु कौन्तेय	{कल्प-2} पुनः-2 आवर्तन वाले हैं; किन्तु हे {देहभाननाशिनी} कुन्ती के पुत्र! {पु. संगम में}
मां उपेत्य पुनर्जन्म न विद्यते	मेरे पास पहुँचकर {21 जन्म से पहले इस दुखधाम में नारकीय} जन्म फिर से नहीं होता।

{द्विसहस्रार्धवर्षाणां}अहर्यत् ब्रह्मणः विदुः। {एतेषां प्रमाणं} रात्रिं ते अहोरात्रविदः जनाः।। 8/17

ब्रह्मणः अहः द्विसहस्रार्धवर्षाणां	{ज्ञानचन्द्रमा} ब्रह्मा का {ज्ञान प्रकाशयुक्त} दिन {उत्तरायण मार्ग} ढाई हज़ार वर्षों का है।
एतेषां प्रमाणं	{सत-त्रेतायुगी स्वर्ग और} इतने ही प्रमाण {2500 वर्ष} की {द्वापर-कलियुगी नारकीय विधर्मियों वाली}
रात्रिं यत् विदुः ते	रात्रि है। {अज्ञानान्धकार-युक्त •दक्षिणायन मार्ग का निमित्त सदा अपूर्णनीय संगठित चतुर्मुखी ज्ञानचन्द्रमा ब्रह्मा ही है। (गीता-8/18,19,24,25)} ऐसा जो जानते हैं, वे {मानते हैं कि ब्रह्मा की याद, मूर्ति, मंदिर क्यों नहीं बने?}
जनाः अहोरात्रविदः	{एडवांस} ब्राह्मण जन {भोगी ब्रह्मा के यथार्थ} दिन और रात्रि के जानकार हैं।

नोटः-हैविनली गॉडफादर निर्मित स्वर्गीय दिन भी ढाई हज़ार वर्ष है और प्रैक्टिकल मानवीय हिस्ट्री में विधर्मियों के द्वैतवादी द्वापुर से अन्यान्य धर्मपिताओं द्वारा यह नर-निर्मित नरक रूप अज्ञानरात भी 2500 वर्ष है।

अव्यक्तात् व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्ति अहरागमे। {रात्र्यान्ते} प्रलीयन्ते तत्र एव अव्यक्तसञ्ज्ञके।। 8/18

अहरागमे अव्यक्तात् सर्वाः	{शूटिंग में ही ब्रह्मा का स्वर्गीय} दिन आने पर {निराकारी} अव्यक्तधाम {आत्मलोक} से सभी
व्यक्तयः प्रभवन्ति {रात्र्यान्ते}	व्यक्त प्राणी {नं. वार} यहाँ {सृष्टि में} आते हैं। {फिर ब्रह्मा की अज्ञानान्धकार की} रात्रि-अंत में
अव्यक्तसंज्ञके तत्रैव प्रलीयन्ते	अव्यक्तधाम नामक उस ही {परमधाम• में नं.वार 7 अरब की संख्या} में लीन हो जाते हैं।

•यह अव्यक्त परमधाम सर्वसामान्य निराकारी अणुरूप आत्माओं व निराकार परमपिता शिव का भी अपना सामान्य घर है, जहाँ से आकर ये सभी पार्टधारी संसारी सृष्टि-रंगमंच पर जन्म-2 शरीर रूपी वस्त्र बदल-2 खेलते हैं।

भूतग्रामः स एव अयं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते। {रात्र्यान्ते} अवशः पार्थ प्रभवति अहरागमे।। 8/19

स एवायं भूतग्रामः भूत्वा-2	वही-2 यह {मानवीय} प्राणी-समुदाय {चतुर्युगी में नं. वार} बार-2 जन्म लेकर {यहाँ सृष्टि से}
{रात्र्यान्ते} अवशः प्रलीयते	{चतुर्मुखी ब्रह्मा की} रात्रि के {प्रलय-} अंत में बरबस {अव्यक्तधाम में} पूरा लीन हो जाता है।
पार्थ अहरागमे प्रभवति	{और} हे पृथापुत्र! {16 कला का सतयुगी स्वर्गीय} दिन आने पर {नं.वार} प्रगट होने लगता है।

परः तस्मात् तु भावः अन्यः अव्यक्तः अव्यक्तात् सनातनः। यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति।।8/20

तस्मात् अव्यक्तात् तु परः यः अव्यक्तः	उस अदर्शनीय {देवात्माओं} से भी प्रबल जो अदर्शनीय {बीजरूप रुद्रगणों का}
अन्यः सनातनः भावः	दूसरा प्राचीनतम {सृष्टिवृक्षीय 4.5 लाख असल सूर्यवंशी• चैतन्य सितारों का पितृ-} भाव है,
स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति	वह सब प्राणियों के {पार्ट का समयांतराल} नष्ट होने पर {भी} नहीं विनाश होता।

{•आकाशीय 9 लाख जड़ सितारों मानिंद धरती के बीजरूप पितृभावी दिन के 4.5 लाख अतीन्द्रिय सुख वाले वैकुण्ठ के कलातीत चैतन्य सितारे हैं जिनमें 16 कला सतयुगी कृष्णचन्द्र जैसे 4.5 लाख रात्रि के मातृ-भावी भी मिल जाते हैं।}

अव्यक्तः अक्षरः इति उक्तः तं आहुः परमां गतिं। यं प्राप्य न निवर्तन्ते तत् धाम परमं मम।। 8/21

अव्यक्तः अक्षरः इत्युक्तः तं	{उसे} अप्रगट अविनाशी {'लिंगरूप परमब्रह्मलोक'} - ऐसे कहा जाता है। उसको {विष्णु की}
परमां गतिं आहुः यं प्राप्य न	{वैकुण्ठलोकीय} परमगति कहते हैं। जिसको पाकर {बीजरूप• रुद्रगण इस दुखधाम में} नहीं
निवर्तन्ते तत् मम परमं धाम	वापस आते, वह {1 पितृ-प्रधान लिंग भी} मेरा •परमधाम है।

•{सृष्टिवृक्ष के सभी धर्मों से नं. वार चुने हुए श्रेष्ठतम सूर्यवंशी श्रेणी के रुद्राक्षरूप सितारे हैं, जो हीरे जैसे, नं.वार देवेतर, ऑलराउंडर & प्रायः पुरुषभावी ही रहते हैं, जिन्हें मानवीय प्राणियों का पितरगण कहा जाता है}

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यः तु अनन्यया। यस्य अन्तःस्थानि भूतानि येन सर्वं इदं ततं।।8/22

पार्थ स परः पुरुषः त्वनन्यया	हे कुन्तीपुत्र! वह {बेहद सृष्टि रंगमंच का} हीरो परमब्रह्म •परमात्मा तो अव्यभिचारी
भक्त्या लभ्यः यस्य भूतानि	भावना की याद द्वारा प्राप्य है। जिस {जगत्पिता} में {सभी बीज जैसे रुद्राक्षगण रूप} प्राणी
अन्तःस्थानि येनेदं सर्वं ततं	स्थित हैं {और} जिस {सृष्टिवृक्ष के बीज मानवीय 1 बाप} से यह सारा {सृष्टिवृक्ष} विस्तृत है।

{मैं परमपिता+परमात्मा सदाशिव सृष्टिवृक्ष के 7 अरब पत्तों में व्यापक नहीं। "न चाहं तेषु अवस्थित" (गीता 9/4)}
•{वह एक ही आत्मा सो परमपार्टधारी हीरो मूर्तिमान महादेव है, जिसे गीता में बार-2 परम+आत्मा कहा है। (गीताः 6-7; 13-22,31; 15-17)} इसीलिए एकमात्र 'शंकर' नाम ही शिव से जुड़ा है।

[23-28 शुक्ल और कृष्णमार्ग का विषय]

यत्र काले तु अनावृत्तिं आवृत्तिं च एव योगिनः। प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ।। 8/23

भरतर्षभ यत्र काले प्रयाताः	हे {विष्णु रूप} भरतवंश में श्रेष्ठ! जिस {पंचमुखी ब्रह्मा के आदि उत्तरायण} काल में प्रकृष्ट यात्री
योगिनोऽनावृत्तिं चावृत्तिं	योगीजन {दुखधाम} नहीं आते अथवा {जो भी अद्वैतवादी देवगण द्वापर से} आते {भी}
यान्ति तं कालं वक्ष्यामि	हैं, {तो भी} उस {पु. संगमयुगी 60 वर्षीय विशेष शूटिंग} काल को {भी आगे} बताऊँगा।

अग्निः ज्योतिः अहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणं। तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।।8/24

अग्निः ज्योतिरहः शुक्लः	अग्नि {लिंगरूप प्रातः सूर्य} का यह प्रकाशमान दिन={स्वर्णिम स्वर्गीय पु. संगम} शुक्ल पक्ष,
उत्तरायणं षण्मासाः तत्र	उत्तरायण के छः माह, वहाँ के {सूर्यवंशी सन् 1977-78 से 2037-38 तक की रूहानी दौड़ के}
प्रयाताः ब्रह्मविदः	प्रकृष्ट देवयात्री, परमब्रह्म {+परमात्मा} के जानकार {एडवांस गीता ज्ञान के रूहानी ब्राह्मण}
जनाः ब्रह्म गच्छन्ति	लोग {संसार के बीजरूप रुद्रगणों के} परमब्रह्मलोक {ही} जाते हैं। {ऑलराउंडर पार्टधारी हैं ना!}

धूमो रात्रिः तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनं। तत्र चान्द्रमसं ज्योतिः योगी प्राप्य निवर्तते।। 8/25

तथा धूमः रात्रिः कृष्णः षण्मासाः	तथा धूमिल रात्रि {=कलाओं में बंधायमान} कृष्णपक्ष {जो सूर्यवंशी रामपक्ष नहीं है} 6 माह
दक्षिणायनं तत्र	{हिंसक मुस्लिमादि आसुरी धर्मों का} दक्षिणायन मार्ग {अधोमुखी चौमुखी ब्रह्मा का} है। वहाँ {बरबस मृत्यु प्राप्त}
योगी चांद्रमसं	{अर्ध} योगी {अनेकों से सुनी सुनाई बातों के कारण से कलाबद्ध} ज्ञानचन्द्र ब्रह्मा के {धूमिल}
ज्योतिः प्राप्य निवर्तते	प्रकाश को प्राप्त करके, {इसी भटकाने वाले द्वैतवादी नरक में भूतादि बनकर} लौटता है।•

•{जैसे चतुर्मुखी ब्रह्मा के पक्षपाती बी.के. प्रकाशमणि, बी.के. जगदीश, बी.के रमेश आदि सारे ही नीची कुरी के ब्राह्मण सूक्ष्म देह ले रहे हैं, जो पु. संगमी शूटिंग प्रमाण द्वापुर से ही भूत-प्रेत भी बनते रहते हैं।}

शुक्लकृष्णे गती हि एते जगतः शाश्वते मते। एकया याति अनावृत्तिं अन्यया आवर्तते पुनः।। 8/26

जगतः शुक्लकृष्णे एते गती	{2½+2½ हज़ार वर्षीय} जगत की शुक्ल और कृष्ण, ये दोनों गतियाँ {शूटिंग में भी}
हि शाश्वते मते एकया	{& चतुर्युगी में भी} निश्चय ही शाश्वत मान्य हैं। एक से {सीधे ढाई हज़ार वर्ष नरक में}
अनावृत्तिं अन्यया पुनरावर्तते	नहीं आते, दूसरी {कृष्णगति} से पुनः {इन्हीं हिंसक विधर्मियों के नरक में भी} लौटते हैं।

न एते सृती पार्थ जानन् योगी मुह्यति कश्चन। तस्मात् सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भव अर्जुन।।8/27

पार्थ एते सृती जानन् कश्चन योगी	हे पृथ्वीराज! इन दोनों मार्गों को जानने वाला कोई योगी {कृष्णचन्द्र की कृष्णगति के}
मुह्यति न तस्मात् अर्जुन सर्वेषु	मोहान्धकार को नहीं पाता। इस कारण हे अर्जुन! सभी {युगों की स्वर्ग या नरक की शूटिंग}
कालेषु योगयुक्तः भव	कालों में {अर्जुन/आदम में आए सभी रूहों के सुप्रीम बाप शिवज्योति से} योग लगा।

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत् पुण्यफलं प्रदिष्टं। अत्येति तत् सर्वं इदं विदित्वा योगी परं स्थानं उपैति च आद्यं।। 8/28

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु च दानेषु	{नरनिर्मित} वेदों में,{भौतिक} यज्ञों में,{दैहिक} तप में और {सांसारिक पदार्थों के} दान में
एव यत् पुण्यफलं प्रदिष्टं योगी	भी जो {अल्पकालीन} पुण्यफल बताया गया है, राजयोगी {पुरुषोत्तम संगमयुग में ही}
इदं विदित्वा तत् सर्वं अत्येति	यह {एडवांस गीता-ज्ञान} जानकर, उस सारे {मानवीय कर्मकांड} के पार चला जाता है
च आद्यं परं स्थानं उपैति	और {सतयुगी स्वर्गीय} आदिकालीन {विष्णुलोकीय वैकुण्ठ के कलातीत} परमपद को पाता है।